By. Dr. Shailendra Kumar
Dept. of economics
Raja Singh College
Siwan

10.7.20

आर्थिक स्थैतिकी का महत्व (importance of economic statics)

आर्थिक स्थैतिकी का सैद्धान्तिक और व्यावहारिक महत्त्व पाया जाता है। जो इस प्रकार है:-

(1) शिक्षक के रूप में (As a teacher) - ज्यूथन (Zeuthan) के अनुसार, आर्थिक स्थैतिकी का परिचयात्मक शिक्षक के रूप में मूल्य है। कुछ चरों को दिया हुआ और स्थिर मान लेने पर आर्थिक समस्याओं को समझ लेना आसान हो जाता है। आर्थिक स्थैतिकी एक स्थिर अवस्था की आर्थिक स्थिति का काल्पनिक मॉडल प्रदान करती है जो कुछ परिवर्तनों के परिणामों को समझने में विद्यार्थी की सहायता करते हैं। उदाहरणार्थ, एक अर्थव्यवस्था में कीमतों के व्यवहार को समझने के लिए संतुलन कीमत का अध्ययन उपयोगी है। स्थैतिक अवस्था में, माँग और पूर्ति हमेशा संतुलन में होते हैं। यह बात, कि माँग और पूर्ति में परिवर्तन कीमतों को किस प्रकार प्रभावित करते हैं, तभी समझ में आ सकती है जब माँग और पूर्ति दोनों ही संतुलन की स्थिति में हों।

(2) जांच के लिए (For investigations) - क्लासिकी अर्थशास्त्री जांच के उद्देश्य से स्थैतिक अवस्थाओं को मान कर चले। सामाजिक स्थितिओं को समझने के लिए उन्होंने व्यक्तिगत फर्मों, उद्योग और ~~अपभोक्ताओं~~ उपभोक्ताओं की क्रियाओं का अध्ययन किया और थोड़े प्रावैगिक मिश्रण से स्थैतिक विश्लेषण को इस योग्य बनाया कि वास्तविक जगत पर लागू किया जा सके।

(3) तुलनात्मक स्थैतिकी के अध्ययन के लिए ~~(To study compar~~ (To study comparative statics)

Scanned by CamScanner

स्थैतिक विश्लेषण का एक और लाभ यह है कि वह संतुलन की एक स्थिति की दूसरी से तुलना करने में सहायता देता है। इसे तुलनात्मक स्थैतिकी कहते हैं जो कि आर्थिक स्थैतिकी पर आधारित है।

(4) जटिल समस्याओं को हल करने में (In solving complex problems):- फिर आर्थिक स्थैतिकी में हम यह अध्ययन करते हैं कि एक व्यक्ति अधिकतम संतुष्टि प्राप्त करने के लिए अपनी सीमित आय को विभिन्न वस्तुओं में कैसे वितरित करता है; कि एक उत्पादक किए हुए उत्पादक स्रोतों को इष्टतम ढंग से मिलाकर कैसे अधिकतम लाभ प्राप्त करता है; कि वस्तुओं और सेवाओं की कीमतें कैसे निर्धारित होती हैं; और कि राष्ट्रीय आय का वितरण कैसे होता है। इन जटिल समस्याओं को हल करने में स्थैतिकी विश्लेषण बहुत महत्त्व का है।

(5) आर्थिक सिद्धान्तों में (In economic principles):- इसके अतिरिक्त आर्थिक सिद्धान्त का निम्नलिखित विशाल क्षेत्र आर्थिक स्थैतिकी के अध्ययन पर आधारित है। रॉबिन्स की अर्थशास्त्र की परिभाषा से संबंधित सिद्धान्त और नियम का केन्द्रीय तत्त्व निश्चित रूप से आर्थिक स्थैतिकी का विषय है। स्वतंत्र व्यापार का विषय, अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का सिद्धान्त, जोन रॉबिन्सन का Economics of Imperfect competition, चैम्बरलिन का Monopolistic Competition और हिक्स का Value and capital ये सब स्थैतिक विश्लेषण के प्रयोग हैं जिन्होंने आर्थिक सिद्धान्त को समृद्ध बनाया है।

Scanned by CamScanner

(6) अनिश्चितता (Uncertainty) - क्योंकि परिवर्तन में तथा उत्पादन के वैकल्पिक तरीकों में अनिश्चितता रहती है और सतत परिवर्तन की अपेक्षा एकदा - समाप्त परिवर्तन (once over change) अधिक अनिश्चितता उत्पन्न करता है; इसलिए प्रोफेसर हैरड का मत है कि "नाइट (knight) का लाभ सिद्धान्त स्थैतिकी के क्षेत्र में आता है।" यह ~~स्थैतिकी~~ स्थैतिक विश्लेषण की सहायता से अर्थशास्त्र की अत्यन्त भ्रामक समस्याओं को सुलझाने का प्रयत्न है।

(7) प्रत्याशाएँ (Expectations) :- प्रत्याशाएँ प्रायः आर्थिक प्रावैगिकी के क्षेत्र में आती हैं। परन्तु प्रत्याशाओं में एक-बार परिवर्तन प्रभावों को स्थैतिक अर्थशास्त्र की तकनीक संभालती है। हैरड के इस मत से सहमति प्रकट करते हुए प्रोफेसर हिक्स ने अपनी पुस्तक Trade Cycles में केन्ज की General Theory को पूर्ण रूप से स्थैतिक माना है क्योंकि इसमें ~~अत~~ प्रत्याशाएँ मौजूद हैं।

(8) केन्ज का सिद्धान्त (Kegnesian Theory) - धनात्मक बचत (positive saving) के सिद्धान्त को छोड़कर केन्ज विश्लेषण के सभी चर स्थैतिक प्रकृति के हैं। वे ये हैं: अनैच्छिक बेरोजगारी, तरलता अधिमान, पूँजी की सीमान्त उत्पादकता और सीमान्त उपभोग प्रवृत्ति। इन सब चरों की व्याख्या करते हुए केन्ज ने एकदा-समाप्त परिवर्तन दिखाया है जो स्थैतिकी विश्लेषण का प्रयोग है।

Scanned by CamScanner

(9) व्यापार चक्र (Trade cycles) - हैरड मानता है कि स्थैतिक अवस्थाओं से भी व्यापार चक्र का अनुभव होता है जबकि वह नियमित और समय समय पर होने वाले उतार-चढ़ावों को प्रकट करता है। दूसरे विश्व युद्ध से पहले व्यापार-चक्रों के जलवायु संबंधी मनोवैज्ञानिक और मुद्रा सिद्धान्तों की प्रकृति स्थैतिक थी। हाल में काल-प्रवाह और त्वरण के नियम का समावेश करके टिन्बर्जन, कलैस्की, फ्रिश, सैम्युलसन और हिक्स ने व्यापार चक्र के प्रावैगिक सिद्धान्तों का विकास किया।